Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भारतीय महिलाएं बदलता समाज और बदलती चुनौतियां

डॉक्टर सोनिया गुप्ता (सहायक प्राध्यापिका हिंदी.),

महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय, झज्जर।

'मातृ देवो भव 'के अनुपम उद्घोष से अनुप्राणित हमारी भारतीय संस्कृति में स्त्रियों का सदा से ही अत्यंत गौरवपूर्ण स्थान रहा है और 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' कहकर मनु ने उसके गौरव को द्विगुणित कर दिया है। नारी परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट रचना मानी जाती है उसमें प्रेम, ममता,सहनशीलता जैसे कुछ ऐसे गुण हैं जो उसकी छवि को महिमा मंडित करते हैं। नर नारी का रिश्ता कुछ ऐसा है कि एक के बिना दूसरा अधूरा है। प्रत्येक सफल पुरुष के पीछे किसी न किसी नारी का योगदान है इसमें संदेह नहीं। तुलसी को तुलसीदास जैसा महान कवि बनाने के पीछे श्रेय जाता है तो वह उनकी पत्नी रत्नावली को जाता है। रत्नावली के तिरस्कार ने ही तुलसीदास के ज्ञान को जगाया और उन्हें कवि, कुलगुरू के गौरवमय स्थान को प्राप्त कराया और इस प्रकार के अनगिनत उदाहरण हमारे सामने आते हैं।

स्त्री व पुरुष समाज की दो महत्वपूर्ण इकाइयां हैं। आधुनिक परिवेश में स्त्री पुरुष समानता और सह अस्तित्व को पर्याप्त स्वीकृति मिली है। यह भी तथ्य है कि पुरुषों के बराबर स्त्रियों की स्वायत्तता का प्रश्न अब भी लगातार खड़ा है, जिसकी जांच आवश्यक है। दूसरी तरफ यह भी सच्चाई है कि बदलते परिवेश में शिक्षा, खेल, राजनीति, तकनीकी आदि सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने अपने आप को साबित किया है। नारी मुक्ति आंदोलन, सरकारी, गैर सरकारी योजनाएं, जन जागृति आदि ने महिलाओं के प्रति अपनी सोच बदली है। परंतु क्या इन सब से स्त्री की स्वतंत्रता सत्ता बन पाएगी। आज भी पुरुष जहां सत्ता के शीर्ष पर हैं वहीं महिलाएं आज भी अपनी इच्छाओं, अधिकारों के लिए प्रयासरत हैं।

यदि हम भारतीय इतिहास पर नजर डालते हैं तो हम पाते हैं कि भारतीय नारी ने परिवर्तनशील सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य पर अनेक उत्थान और पतन देखे हैं। कभी उसे उच्च स्थान पर बिठाते हुए तिरस्कृत किया गया जहां उसका जीवन नारकीय बना दिया गया। प्राचीन समय में 'पर्दा प्रथा 'ने नारी के संपूर्ण व्यक्तित्व को हिला कर रख दिया और वह केवल बच्चे पैदा करने तक ही सीमित रह गई। नारी को इतना सीमित रखने का परिणाम यह हुआ कि आज भारतीय समाज अशिक्षित, अमर्यादित और कुप्रथाओं का देश बनकर जनसंख्या विस्फोट जैसी गंभीर स्थिति में पहुंच गया। जिससे गरीबी, भुखमरी आदि समस्याएं विकराल रूप धारण कर चुकी है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भारत में नारी को घरेलू समझा जाता है। उसे शिक्षा न मिलने से वह अपने अधिकार और कर्तव्य के प्रति सचेत नहीं हो पाती। भारतीय विश्वविद्यालय समिति द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार 15 वर्ष से अधिक उम्र के केवल 34% महिलाएं अभी तक भारत में साक्षर हैं। इन 34% में 90% महिलाओं को केवल प्राथमिक शिक्षा प्राप्त है। एक अन्य अध्ययन के अनुसार 6 से 11 वर्ष की 50% ग्रामीण बालिकाएं प्राथमिक शिक्षा ग्रहण ही नहीं कर पाती। घर के कार्यों में बढ़ती व्यस्तता के कारण ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों में बालिकाएं विद्यालय में अनुपस्थित रहती हैं।

भारतीय महिलाओं की अल्पायु में विवाह की परंपरा उनके समग्र विकास में सबसे बड़ी बाधा है। यह परंपरा बहुत पुरानी है। बालिकाओं के की अल्प आयु में विवाह की रोक के बावजूद भी राजस्थान में अक्षय तृतीया पर हजारों लड़कियों की शादी कर दी जाती है।

पिछले लंबे समय से भारत में लिंगानुपात में संतुलन लगातार बढ़ रहा है। प्रत्येक हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या को लिंगानुपात कहते हैं। यह 1951 में 946 था जो घटकर 1971 में 930 और 1991 में 927 हो गया है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत एक ऐसा देश है जहां लिंगानुपात लगातार घट रहा है।

भारतीय समाज में नारी के प्रति अत्याचार का ग्राफ दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है कौन विराम बालिकाएं और गरीब महिलाएं कहीं ना कहीं बलात्कार से पीड़ित हो रही हैं फोन विराम 1974 में भारत में 2062 लगा बलात्कार के मामले दर्ज किए गए थे जो 1985 में बढ़कर 6189 और 1993 में 11117 हो गए। नारी को पीड़ित करने के लिए एक और कारण है अपहरण की प्रवृत्ति। 1985 में नई प्रताड़ना के 13952 मामले थे जो 1989 में बढ़कर 16689 हो गए गृह मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में प्रति 47 मिनट में एक नारी के साथ बलात्कार तथा प्रति 44 मिनट में एक नारी का अपहरण हो रहा है।

भारतीय समाज में सामाजिक कुरीति के रूप में लंबे समय से दहेज प्रथा के रूप में एक दानव भी पल रहा है। इस कुरीति के कारण युवतियां द्वारा की गई आत्महत्या या उनको जलाए जाने के समाचार प्रतिदिन के समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि अधिक से अधिक दहेज के लालच में हम अपने ही घर की स्त्री को अर्धांगिनी को प्रताड़ित करते हैं। एक आंकड़े के अनुसार हमारे देश में प्रतिदिन 17 नव विवाहिताएं अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेती हैं। सती प्रथा जैसे सामाजिक कुरीति से अभी हम जैसे तैसे उबर पाए थे कि इस सामाजिक कुरीति ने महिलाओं के वर्चस्व को समाप्त करने में अपनी कोई ताकत नहीं छोड़ रखी है। इस कुप्रथा का संपूर्ण देश में ज्यादा प्रचलन नहीं है किंतु ऐसी मृत्यु के लिए हमारा शिक्षित एवं बौद्धिक समाज जिम्मेदार आवश्यक है।

समाज के निर्माण में महिला और पुरुष दोनों की समान रूप से भूमिका है। यह भी सच है कि दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए यदि समाज का वास्तविक विकास संभव है तो स्त्री और पुरुष को समान

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

रूप से महत्व देना होगा। यह देखा जा रहा है कि जिन गांवों में ग्राम प्रधान एक महिला है वहां पुरुष वर्ग अपना वर्चस्व या दबदबा बनाए हुए हैं । अब तो हमारी सरकार भी नारी के समग्र उत्थान के प्रति जागृत हो गई है। यूनिसेफ द्वारा भी नारी के समग्र उत्थान के लिए अनेक कार्यक्रम प्रतिपादित किए गए हैं।

भारतीय महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति

किसी भी समाज का संपूर्ण विकास तभी संभव है जब उसमें महिलाओं की भागीदारी हो। भारतीय समाज में महिलाओं की लगभग आधी आबादी है। जब बात होती है महिलाओं की स्वतंत्रता की, उसके आगे आने की अथवा पुरुषों से उसकी समानता की तब हम सोचने को मजबूर होते हैं समाज में उसकी दयनीय स्थिति को लेकर।

राजा राममोहन राय के स्त्री सुधारक आंदोलन से लेकर आज तक महिलाओं की स्थिति में काफी परिवर्तन हुए हैं। महिलाओं ने अपनी ही बल पर स्थिति को सुधारा है और समाज में अपनी एक विशेष पहचान बनाई है।

महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति में स्वतंत्रता के 50 दशक बीत जाने के बावजूद कोई खास फर्क नहीं आया है। महिलाओं के बारे में पुरुष प्रधान समाज में अभी तक स्पष्ट धारणा नहीं बन पाई है। पुरुष, जीवन और समाज में सब कुछ करने के लिए स्वतंत्र है और उसे समाज से भी स्वीकृति प्राप्त है। लेकिन महिला समाज में वही कर सकती है जो पुरुष उसके लिए तय करता है।

वैदिक युग में महिलाओं को बहुत आदर प्राप्त था। लड़कियों की गतिशीलता पर रोक नहीं थी। स्मृतिकाल में स्त्रियों पर अनेक प्रतिबंध लगाए गए। महाभारत के समय महिला स्वतंत्रता की बात कही गई है। भारत में विदेशी आक्रमणकारी जब आए, तब भारतीय समाज में अन्याय एवं शोषण का दौर चला। शक, हूण एवं मुगलों ने हमारी प्राचीन समाज की व्यवस्था और वणार्श्रम व्यवस्था को बुरी तरह से अस्थिर कर दिया। इस सामाजिक ढांचे को सुव्यवस्थित करने का कार्य मनु और चाणक्य ने किया। महिला को समाज में सम्मानीय दर्ज मनु ने दिया। चाणक्य ने स्त्री पुरुष दोनों को पुनर्विवाह के अनुमति दी थी। मनु ने तत्कालीन समाज को देखते हुए स्त्रियों की सुरक्षा के कुछ सामाजिक विधान बनाएं, बाद में वही नारी के शोषण एवं अत्याचार के पर्याय बन गए। आक्रमणकारियों से महिलाओं की सुरक्षा के लिए उन्हें जन्म से लेकर मृत्यु तक पुरुष के अधीन रहने की व्यवस्था की। इस समय समाज में बाल विवाह के कारण महिलाएं शिक्षा से वंचित हो गई।

स्वतंत्रता के बाद महिलाओं को उत्पीड़न से मुक्त करने के लिए अनेक व्यवस्थाएं की गई। संविधान के अनुसार स्त्रियों को अनेक अधिकार दिए गए, वे कानूनी रूप से उपेक्षित ,असुरक्षित एवं असहाय नहीं रह

गई। स्त्री पुरुष संबंध आपसी समझ और सम्मान पर आधारित होने चाहिए ,तभी उनकी सार्थकता है। महिलाओं के विकास में सबसे मुख्य रुकावट थी- जागरूकता की कमी। स्वतंत्रता के समय महिला साक्षरता 8.86% थी। पढ़े-लिखे ना होने के कारण महिलाओं में आत्मविश्वास नहीं था। स्वतंत्रता के बाद महिलाओं की शिक्षा के लिए अनेक प्रयास किए गए। 1991 में महिला शिक्षा 39.42% हो गई। 14 वर्ष तक की बालिकाओं को शिक्षित करने की योजना बनाई गई। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की संख्या में तिगुनी वृद्धि हुई। फिर भी व्यावसायिक, कृषि, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में उनकी संख्या कम है।

महिलाओं के विकास में व्यक्तिगत तथा सामाजिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक स्वतंत्रता भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। जब तक महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता नहीं होगी, तब तक उनका विकास संभव है। मार्क्सवादी लेखन के अनुसार आर्थिक परतंत्रता ही नारी को व्यक्तिक स्वतंत्रता के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है। आर्थिक दृष्टि से संपन्न और आत्मनिर्भर हुए बिना महिला को परिवार और समाज उचित सम्मान नहीं देगा। एक सामान्य महिला घरेलू कार्यों में 10 से 16 घंटे व्यतीत करती है परंतु दुर्भाग्य यह है कि उसके इन घरेलू कार्य का कोई मूल्यांकन नहीं है। विभिन्न असंगठित क्षेत्र में काम करने के बावजूद भी महिलाएं आर्थिक रूप से कमजोर हैं, और अपनी हर जरूरत के लिए पुरुष पर आश्रित हैं।

महिलाओं का आर्थिक कार्यों में योगदान बढ़ाने के लिए शासकीय स्तर पर भी प्रयास किया जा रहे हैं। आर्थिक रूप से सशक्त महिलाओं को आसान शर्तों पर ऋण एवं सुविधाओं की उपलब्धता एक अच्छा संकेत है। औद्योगीकरण के कारण समाज में गतिशीलता आई है। महिला घर की दहलीज लाँघकर आत्मविश्वास के साथ प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के बराबरी कर रहे हैं। आर्थिक रूप से संपन्न और आत्मनिर्भर हुए बिना महिला को परिवार और समाज उचित सम्मान नहीं देगा।

अब प्रश्न यह उठता है कि महिलाओं की सामाजिक आर्थिक खराब स्थिति के लिए जिम्मेदार कौन है क्या केवल पुरुष वर्ग को दोषी ठहरा कर हम अन्य परिस्थितियों से मुंह मोड़ सकते हैं। क्या कारण है कि भारतीय समाज की मजबूत सामाजिक संरचना अब धीरे-धीरे विघ्ठित होने लगी है। औद्योगिक सभ्यता एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से समाज में लंबे समय से चली आ रही पारंपरिक मान्यताएं टूटने लगी। शिक्षा प्रशिक्षण औद्योगिक विस्तार में रोजगार के नए अवसर समाज में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन लाए। महिलाएं आधुनिक समाज के दबाव से गुजर रहे हैं उनमें आत्मविश्वास बौद्धिकता पुरानी मान्यताओं का खंडन अजनबी पर आदि दृष्टिकोण विकसित हुए। उसके अपनी आस्था आकांक्षा है जिसको वह पूरा करना चाहती है परंतु जब आकांक्षा इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती तो उसमें असंतोष जन्म लेता है और वह विद्रोह की भूमिका निर्मित होती है।

वर्तमान में समाज में चारित्रिक एवं सांस्कृतिक संकट आ गया है। आधुनिकता की इस होड़ में फिल्मों ,धारावाहिको, विज्ञापनों, सौंदर्य प्रतियोगिताओं में जिस प्रकार महिलाओं का प्रचार किया जा रहा है उससे यह प्रतीत होता है कि वह वाकई वस्तु रूप में बदल चुकी है। महिलाएं पद, पैसा और सम्मान के मोहपाश में आकर पूंजी पतियों के चंगुल में फसती जा रही है। डॉ सुरेंद्र जैन के अनुसार ,'देहगत सफलता का यह दौर धन के सहारे या बल के सहारे दैहिक शोषण का आधार बिंदु बनता जा रहा है। मानवीय संवेदनाएं जड़वत हो गई लेकिन आज नारियों को अपने नारीत्व पर जैसे गर्व ही नहीं रहा रहा। पहले तो पुरुषों उसे भोग की वस्तु समझता था अब उसने स्वयं को भी भोग की वस्तु बना डाला।

सिनेमा सामाजिक बदलाव का अचूक अस्त्र कहा जाता है। सिनेमा सेअशिक्षा, अज्ञानता और सामाजिक उत्थान की दिशा में कई आशाएं थीं। लेकिन सिनेमा ने पूंजीवाद, औद्योगिक समाज की यांत्रिकता के बल पर मानवीय संवेदनाओं को खो दिया। सिनेमा ने नारी जीवन और स्वभाव का एकदम अस्वाभाविक रूप प्रस्तुत कर हिंसा, बलात्कार ,भ्रष्टाचार वाले सामाजिक विकार को बढ़ावा दिया।

इन सब के बावजूद महिलाओं की प्रगति एवं उनके नए क्षेत्र में प्रवेश करने की उपलब्धियां की एक मुख्य भागीदारी है। पुराने भारतीय समाज में गार्गी, मैत्रयी और अनुसुइया से लेकर विजयलक्ष्मी पंडित, इंदिरा गांधी,सरोजिनी नायडू, अमृत कौर जैसी राजनीति के शिखर पर पहुंचने वाली महिलाएं नारी शक्ति की प्रेरणा स्रोत है। आकाशीय बुलंदियों को छूने वाली कैप्टन दुर्गा बनर्जी, विश्व के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने वाली बछेंद्री पाल, उड़न परी पीटी उषा, आईपीएस अधिकारी किरण बेदी ने अपने-अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त की और प्रथम भारतीय महिला होने की गौरव को प्राप्त किया।

महिलाओं की सामाजिक आर्थिक विकास स्थिति में मुख्य परिवर्तन लाने के लिए राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किया जा रहे हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए सन 1975 का वर्ष "अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष" के रूप में मनाया गया और 1985 तक महिला उत्थान की विशेष कार्यक्रमों के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दशक' मनाया गया। 15 फरवरी 1997 को नई दिल्ली में राजनीति में पुरुष और महिलाओं की भागीदारी पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया और महिला हितो की रक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय परिषद का गठन किया गया। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को पंचायतों में 35% आरक्षण देकर उनके आत्मविश्वास, राजनैतिक नेतृत्व का अवसर दिया गया। इसका उद्देश्य यही था कि महिलाओं में जागरूकता आ सके और वह विकास की दिशा में आने वाली चुनौतियों का डटकर मुकाबला कर सके।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महिलाओं की संवृद्धि, संरक्षण, विकास हेतु उनकी शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक स्थिति में सुधार के द्वारा ही हम देश की आर्थिक प्रगति को बदल सकते हैं। जरूरत इस बात

की है कि महिला की साक्षरता में वृद्धि की जाए। महिलाओं के विरुद्ध हिंसा समाप्त करने मे कानूनी सुरक्षा के साथ-साथ सामाजिक चेतना जागृत करनी होगी। विवाह, तलाक, गोद लेने के बारे में कानूनी अधिकारों की जानकारी प्रदान कर, संपत्ति में भागीदारी तथा समानता का अधिकार प्राप्त करने की दिशा में समाज का योगदान प्राप्त किया जाए। बालिकाओं के प्रति भेदभाव तथा दुर्व्यवहार समाप्त करने के लिए महिलाओं को स्वयं आगे आना होगा, अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूकता लाने के लिए महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढ़ानी होगी। उपभोक्तावादी संस्कृति, भोगवाद एवं देह प्रदर्शन को आधुनिकता समझ लेने की भूल को सुधारना होगा। आर्थिक क्षेत्र में रोजगार, प्रशिक्षण उपलब्ध करा कर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। एक और बड़ी जिम्मेदारी महिलाओं की है कि वह अपने-अपने स्तर पर सभी माताए लड़के लड़की के बीच भेदभाव कम करें , हर महिला दूसरी पिछड़े महिला को सामाजिक रूप से जागरूक एवं शिक्षित करें। आगे आने वाले समय में समस्या का समाधान मिल सकता है क्योंकि सदियों से कुंठित महिला रूढ़ि ग्रस्त हो गई है, उसके अंतर्मन में जब तक महिला के प्रति प्रगतिशील धारण नहीं बनती तब तक महिला की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार की संभावना नहीं होगी।

संदर्भ सूची

1. भारतीय नारी: वर्तमान समस्याएं एवं भावी समाधान — डॉ आर पी तिवारी, पेज नंबर 15

2.भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति — डॉक्टर ए के सिंह पेज नंबर 29

3 .भारतीय महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति —श्रीनिवास मिश्र पेज नंबर 39

4 .मोहन राकेश का नारी संसार — डॉक्टर श्रीमती मीना पिंपलापुरी पेज नंबर 224

5. समाज और संस्कृति पंडित – राजाराम शास्त्री पेज नंबर 193